तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय

'' अकेला पलाश '' उपन्यास में चित्रित नारी ''

विषय प्रवेश -

मानव जाति की सभ्यता एवं सामाजिक विकास का मूल स्रोत नारी है। मानव जीवन में नर-नारी का अन्योन्याश्रित संबंध है। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में नर के बिना नारी और नारी के बिना नर अपूर्ण है। सभ्यता और संस्कृति का भवन नर-नारी संबंध पर आधारित है। इस संबंध की समता से सभ्यता का उत्कर्ष होता है और विषमता से अपकर्ष।

सृष्टि के विकास क्रम मे नर के समान नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। प्रजनन जीव का महत्त्वपूर्ण कार्य है। गर्भधारणा से लेकर संतान को जन्म देने तथा उस शिशु के सूझबूझ आने तक का लालन-पालन मुख्यत: स्त्री ही करती है। याज्ञवल्क्यमुनि का कथन है - " जिस तरह चने अथवा सीप का आधा दल दूसरे से मिलकर पूर्ण होता है, उसी प्रकार पुरूष के सामने का खाली आकाश नारी के साथ मिलने से पूर्ण होता है। '' प्रकृति की मनोरम पुत्री नारी ने अपने सौन्दर्य और व्यक्तित्व से युगों-युगों से धर्म साहित्य और इतिहास को प्रभावित किया है। अपने विविध रूपों में उसने पुरूष का पोषण किया है। उसे प्रेरणा दी है।

टॉमस मूर का मंतव्य है -" स्त्री रात का तारा और प्रभात का हीरा है, वह तो ओस का कण है जिससे काँटों का मुँह भी हीरों से भर

जाता है।''[१] अपने आप में इतनी महत्त्वपूर्ण नारी का व्यक्तित्व सृष्टि के आरंभ से ही देश काल एवं वातावरण के अनुसार कभी दबता, कभी उभरता दिखाई देता है। मूल्याधिकार के लिए उसे निरंतर संघर्ष करना पड़ा है। मानवीय भावना और मानसिक क्षमता के स्तरपर नारी पुरूष के समकक्ष है, परंतु प्राकृतिक,शारीरिक भिन्नता को ही महत्त्व देकर विभिन्न परिस्थितियों में उसे दुर्बल तथा निम्न स्तर की साबित करने का प्रयास होता रहा है।

विश्व के ज्ञात इतिहास पर दृष्टिपात करने पर दिखाई देता है कि मानव सभ्यता की आरंभिक स्थिति में नर-नारी समकक्ष माने जाते थे। स्त्रियों को निम्न स्तर की नहीं माना जाता था। ईसापूर्व १२ वीं शती में यूरोप में जुद्दा स्त्रिया योद्धा, भविष्यवेत्ता और न्यायाधीश इत्यादि के पद पर आसीन थीं। अरेबिया में आरंभ में पैगंबरों की स्त्रियों को पर्याप्त स्वंतत्रता थी। " बटल ऑफ कमेल '' में बीवी आयेशा ने योद्धा के रूप में सराहनीय कार्य किया था। सुलतान वायझिद (पहला) , रशिद-एल-ममुन तथा हारून-अल-इजिप्त में नारियों को कानूनी संरक्षण प्राप्त था। तार्तरों के आक्रमण के पश्चात , मुस्लिम स्त्रियों को अनेक कड़े नियमों में बाध्य किया गया ।

" ग्रीस में स्त्रियाँ सभी क्षेत्रों में सहयोग लेती थी । साहित्य क्षेत्र में भी पेनलोप, अन्ड्रोमेश आदि वहाँ की नारियाँ अमर हैं । इटली स्त्रियाँ शूरांगना थी, तो जर्मन स्त्रियाँ अपनी टुकड़ियों की प्रमुख हुआ करती थी। इंग्लैड़ की स्त्रियाँ पुरूषों के कंधों से कंधे मिलाकर प्राचीन काल में भी कार्यरत रही है। सभ्यता की इस स्थिति ने विश्व भर में विभिन्न कारणों से

---

१ *डॉ. रामकुमार वर्मा - कुललालना (गद्यभाग), पृष्ठ १४८।*

करवट ले ली और नारी की स्वतंत्रता का हरण कर उसे समाज में निम्नवर्ग में परिगणित किया जाने लगा : '' [१]

३.१ *भारतीय समाज में नारी का स्थान -*

प्राचीन भारतीय समाज में नारी का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है और समाज का आवश्यक अंग है परिवार एवं परिवार का केन्द्र बिंदु नारी है। विदेशियों को भारतीय संस्कृति की जिन विशेषताओं ने अपनी ओर आकृष्ट किया है उनमें नारी-गौरव प्रमुख है। वैदिक सभ्यता और साहित्य के निर्माण में नारी का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है।

१. निरूक्त में कहा है - " मानयन्ति एना : पुरूषा : '' पुरूष उसका सम्मान करते हैं अत: उसे ' मेना ' कहा गया है।

२. नारी नर की सहयोगिनी है अत: उसे ' योषा ' कहते हैं।

३. वह सौन्दर्य को बुनती या बिखेरती है - वयति सौन्दर्यम्। अत : उसे ' वामा' कहा है।

४. नारी पुरूष के मन को आल्हादित करती है अत : वह ' प्रमदा ' है।

५. वह काम्या होन से ' कामिनी ', रम्या होने से ' रमणी ', सन्तति उत्पन्न करने के कारण ' जननी ', ' जाया ' और तेजस्विनी होने के कारण ' भामा ' कहलाती है।

---

१ *प्रा. डॉ. गुरूनाथ नाडगौडा - सामाजिक आंदोलन, पृष्ठ ८०।*

६. माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री आदि सभी रूपों में पूजनीय होने से उसे महिला कहा गया है ।

७. पतिद्वारा उसका भरण पोषण होता है अत: वह ' भार्या ' कहलाती है। ''[१]

इससे स्पष्ट है कि भारत में प्राचीन काल में पुरूष द्वारा पोषित, मन को आल्हादित करनेवाली, अपने विभिन्न रूपों में पूजनीय, सौन्दर्यवती, सहयोगिनी के रूप में नारी को गौरव प्राप्त था। " भारतीय नारी के सभी स्वरूपों में एक सात्विकता थी, एक सौम्यता थी, एक दिव्यत्व था, जो समाज के शिरोभाग को विभूषित करता था और इस स्थान को प्राप्त करनेके लिए उसे कोई संघर्ष नहीं करना पड़ता था । वरन् अपने प्राकृतिक गुणोंकी सहज अभिव्यक्ति में स्वभाव से ही उसे वह पुण्यपद प्राप्त था।''[२] नारी ही सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका और प्रेरणादायिनी होने के कारण उसमें सर्जन, पालन और प्रलय की शक्तियाँ निहित हैं। अत: शास्त्रों और पुराणों मेंनारी फिर वह किसी भी वर्ग की हो " अवध्या '' कही गई है। " भारतवासियों के सभी आदर्श स्त्री रूप में ही पाए जाते हैं। विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का लक्ष्मी में, पराक्रम का महामाया में अथवा दुर्गा में, सौन्दर्य का रति में,पवित्रता का गंगा में। यहाँ तक कि भारतवासियों ने सर्वशक्तिमान भगवान को भी जगत्जननी के रूप में देखा है। ''[३] इसीलिए महर्षि मनु ने भी नारी के सम्मान का प्रतिपादन करते हुए कहा है -

---

१ *मुंशीराम शर्मा - वैदिक संस्कृति और सभ्यता, पृष्ठ १०१ ।*

२ *कल्याण - हिंदू संस्कृति अंग, पृष्ठ ६२५ ।*

३ *चन्द्रावती लखनपाल - स्त्रियों की स्थिति, पृष्ठ १८।*

" यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।

यत्रोतास्तु न पूज्यन्ते सर्वासात्रा फलाक्रिया: ।''[१]

अर्थात जहाँ नारी का पूजन होता है, आदर-सत्कार होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ उनका आदर नहीं होता वहाँ सभी कार्य विफल होते हैं। इसी अर्थ में फिर एक स्थान पर महर्षि ने कहा है -

"शोचन्ति जाम यो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलमा ।''[२]

अर्थाथ जिस घर में स्त्रियाँ शोक करती है वह शीघ्र ही नष्ट होता है। इन पंक्तियों में उन्होंने नारी का अक्षुण्ण महत्त्व स्थापित किया है। इतना ही नहीं नारी को समस्त विधाओं और कलाओं के साथ देवी का स्वरूप कहा गया है - " विद्या समस्तास्तवदेवि भेदा: स्त्रिय: समस्ता सकलाजगत्सु ।''[३]

जिस देश में स्त्रियाँ कष्ट पाती थी वहाँ का शासन असफल माना जाता था। छांदोग्य - उपनिषद में केकेय नरेश अश्वमति ने कहा है - " मेरे राज्य में कोई स्वैरिणी स्त्री नहीं है ।''[४] नारी जाति में स्वैरिता न फैले इस दृष्टि से राज्य का कर्तव्य पुरूषों को कामाचार से बचाना था। शासन में स्त्रियों को ' अवध्य ' माना गया था। जिन अपराधों के लिए पुरूषों को कड़े दंड दिए जाते थे स्त्रियाँ उनके लिए साधारण दंड पाकर छुटकारा पाती थीं।

---

१ *मनुस्मृति खंड़ तीन , पृष्ठ ५६, ५७।*

२ *वही, पृष्ठ ५७।*

३ *मार्कण्डेय पुराण - दुर्गासप्तशती, पृष्ठ ११०६।*

४ *वही, पृष्ठ ११०६।*

शास्त्रकारों ने प्रकृति की सत्ता को पुरूष से स्वतंत्र नहीं माना । प्रकृति परमात्मा में लीन थी । रमण की इच्छा से परमात्मा ने उसे अपने से अलग किया । अर्धनारीश्वर की हरगौरी वाली कल्पना से आज भी पत्नी को अर्धांगिनी हा जाता है। उस अदिशक्ति की पुनरावृत्ति आज भी सीताराम, राधेश्याम, उमाशंकर आदि नामों में की जा रही है। इस प्रकार वैदिक काल से भारतीय समाज में नारी का स्थान गौरवपूर्ण रहा है।

३.२ *विद्वानों के विचारों में नारी* –

विभिन्न मनीषियों ने अपने लेखन में नारी के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए हैं उन्हें देखना समीचीन होगा –

१ महात्मा गांधी –

महात्मा गांधी जी ने नारी को नर की अपेक्षा श्रेष्ठ बताते हुए कहा है – " स्त्री को अबला कहना उसका अपमान है। यदि शक्ति का अभिप्राय पाशविक शक्ति है तो स्त्री सचमुच पुरूष की अपेक्षा काम शक्तिशाली है। यदि शक्ति का मतलब नैतिक शक्ति है तो स्त्री पुरूष से अधिक शक्तिमान है। ... यदि पति देवता है तो पत्नी भी देवी है। वह दासी नहीं बल्कि मित्र तथा सचिव है .... पति-पत्नी एक दूसरे के गुरू हैं।"[१] गांधी जी के मतानुसार नर-नारी में एक के अभाव में दूसरे का महत्व निरर्थक है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

---

१ *संकलन और संपादन - यू. एस. मोहनराव - महात्मा गांधी का संदेश, पृष्ट४२ ।*

२ स्वामी विवेकानंद -

' स्त्री पूजन से ही समाज की प्रगति होती है। जिस देश में अथवा समाज में स्त्री पूजन नहीं होता वह देश अथवा समाज कभी ऊँचा नहीं उठ सकता।''[१] पश्चिमी देशों के अध:पतन का कारण उन्होंने 'शक्तिरूपिणी स्त्री की अवहेलना ' माना है।

३ डॉ. राधाकृष्णन् -

आपने जुलू शब्दकोश के अनुसार पुरूष की परिभाषा करते हुए बतलाया है कि - " एक पशु जिसका प्रशिक्षण नारी करती है। नारी मूलता पुरूष की शिक्षिका है, तब भी जब वह बच्चा होता है तब भी जब वह वयस्क होता है ''[२]

४ लीन यू तुंग -

इस चीनी ग्रंथकार ने स्त्री निंदा से बचने को कहा है।उन्होंने कहा है - " जब हम यह सोच लेते है कि बिना माता के इस संसार में कोई नहीं आया, हमारी धारणा अत्यंत उदार हो जाती है।''

(" No man can Speak dispragingly if he realise that no one has come into the world without a mother"[३])

---

१ *विवेकानंद (मराठी संस्करण)- भारतीय नारी, पृष्ठ ७३।*

२ *डॉ राधाकृष्णन् - धर्म और समाज, पृष्ठ १६७।*

३ Lin u Tung – Importance of living A

५ कोपर -

अपने लिखा है " यदि सम्पूर्ण विश्व का राज्य भी मिले और नारी न हो तो वह पुरूष भिक्षुक ही है परंतु अपने गुणोंवाली नारी भिक्षुक के घर में भी हो तो वह राजा है। ''[१]

६ डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी -

द्विवेदी जैसे मूर्धन्य आलोचक ने कहा है -" जहाँ कही अपने आपको उत्सर्ग करने की अपने आपको खपा देने की भावना प्रधान है, वह नारी है। ''[२]

७ महादेवी वर्मा -

महादेवी वर्मा ने कहा है -" पुरूष प्रतिशोधमय शोध है। स्त्री क्षमा। पुरूष शुष्क कर्तव्य है। स्त्री सरस सहानुभूति । पुरूष ब्रह्म है तो स्त्री हृदय की प्रेरणा है। ''[३]

प्रेमचंद युगप्रवर्तक साहित्यकार प्रेमचंद जी के मतानुसार -" पुरूष विकास के क्रम में नारी से पीछे है। जिस दिन वह भी पूर्ण विकास तब पहुँचेगा वह स्त्री हो जायेगा । वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया इन्हीं आधारों

---

१ *डॉ. भगतसिंह - प्रेमचंद के नारी पात्र, पृष्ठ १।*

२ *डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी - बाणभट्ट की आत्मकथा, पृष्ठ १५४-१५५।*

३ *महादेवी वर्मा - श्रृंखला की कड़ियाँ , पृष्ट ४।*

पर सृष्टि थमी हुई है और ये स्त्रियों के गुण है। ''[१]

शिवाजी सावंत –

आप ने कहा है " स्त्री म्हणजे विश्वकर्त्यानं आपल्या पहिल्या साखर झोपेच्या वेळी टाकलेला एक हळुवार नि:श्वास आहे. त्या नि:श्वासात पुरूषाच्या जळणा-या मनाला शांत करण्याची प्रचंड शक्ती असते. स्त्रीच्या प्रेमळ सहवासात माणूस जगाचं क्रौर्य विसरू शकतों. अपमानाचे कडू घोट धीरानं पचवू शकतो. नव्या पराक्रमाचे पर्वत उभे करू शकतो. ''[२]

इस प्रकार नाारी के पर्यायवाची शब्दों तथा मनीषियों, चिंतको, साहित्यकारों के नारी संबंध में विचारों को देखने के पश्चात यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि नारी शक्ति, बुद्धि, दया, क्षमा, त्याग, प्रेम आदि की सौन्दर्यपूर्ण प्रतिमा है। महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने मानसी गीत में उसे ' भगवान की अद्भुत कृति ' बताया है। ऐसा एक भी पुरूष न होगा जिसका जीवन माता, पत्नी, भगिनी और पुत्री अादि में से किसी न किसी रूप से प्रभावित न हुआ हो।

३.३ *साहित्य में नारी-जीवन* –

साहित्य और मनुष्य जीवन एक-दूसरे से संबंधित है। नारी जीवन मनुष्य के जीवन का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। " नारी का किसी भी देश के साहित्यसृजन में बहुत बड़ा हाथ होता है।साहित्य और नारी संबंध

---

१ *प्रेमचंद - कर्मभूमि, पृष्ठ २२२ ।*

२ *शिवाजी सावंत - मृत्युंजय, पृष्ठ १५५ ।*

शाश्वत है। साहित्य समाज से अलग रहकर जी नहीं सकता। परिस्थितियों से अलग होकर पनप नहीं सकता आरै युगध में से बहुत दूर आकाश में उड़ाने भरकर सहजानुभूतिमय एवं ग्राह्य नहीं हो सकता। नारी उस समाज का अंग है।''[१] डॉ. वल्लभदास तिवारी के मतानुसार - " नारी नेही हमारी वैदिक सम्यता, संसकृति तथा साहित्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योग दिया है। नारी ही आदिम संस्कृति का उद्‌भव स्थल है और नारी ही सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका और ग्राईस्थ स्नेहसुख की सरिता है।''[२] साहित्य में नारीका चित्रण विविध प्रकार से हुआ है।डॉ. श्यामबाला गोयल के शब्दों में - " हिंदी साहित्य के इतिहास के आधारपर भी वीरगाथाकाल में नारी के श्रृंगारिक रूप की प्रधानता थी अतः उसके लिए युद्‌ध किये गय और उसे युद्‌ध में जीतने,उठाकर लाने की वस्तु समझकर उसके रूप-सौन्दर्यका भोग किया । इसके विपरीत भक्तिकाल में संतकवियों का निवृत्तिपरक दृष्टिकोण होने के कारण नारी को समस्त दुःखो की खान, काम की मूल बताकरउसे त्याज्य बताया गया । रीतियुग में कवि नारी के बाह्म-सौन्दर्यपर इतने आकिर्षत कि उसके प्रत्येक अंग को कामुकता की दृष्टि से देखा गया और उसे भोगविलास की वस्तुमात्र मान लिया गया । अतः मध्ययुगीन नारी अपने किसी भी रूप में उच्च आसन पर नहीं थी। ''[३]

आधुनिक युग में नारी के परम्परागत बंधन धीरे-धीरे छूटने और नारी आज वैदिक कालीन नारियों की बराबरी में आने का प्रयत्न कर

---

१ *डॉ. सावित्री मठपाल - जैनेन्द्र के उपन्यासों नारी पात्र,पृष्ठ १४।*

२ *डॉ. वल्लभदास तिवारी - हिंदी काव्य में नारी, पृष्ठ ४२।*

३ *डॉ. श्यामबाला गोयल- भक्तिकालीन राम तथा कृष्णकाव्य की नारी - भावना : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ ८९।*

रही है। समाज सुधारकों एवंसाहित्यकारों ने नारी स्वतंत्रतापर अपनी कलम चलायी। " दयानंद सरस्वती,राजाराम मोहनराय, रवीन्द्रनाथ टैगोर, सुब्रह्मण्यम भारती, ॲनी बेझंट, ज्योतिरव फुले, धोंडो केशव कर्वे, महात्मा गांधी अादि राष्ट्रनेता एवं समाजसुधारकें ने नारी सुधार का नया रास्ता दिखाया। अब उसे परंपरागत गौरव का स्थान प्राप्त होने लगा । नारी का व्यक्तित्व धीरे-धीरे विकसित होने लगा । हिंदी के प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, सियारामशरण गुप्त, निराला, जैनेंद्रकुमार तथा बंगला के शरत्चंद्र चटर्जी, रवींद्रनाथ टैगोर आदि साहित्यकारों ने भी इसके लिए काफी प्रयत्न किये । इनके साहित्यमें नारी कास्वतंत्र व्यक्तित्व झलकता है।"[१] साहित्य के माध्यम से साहित्यकारों ने नारी को ' सबला ' बनाया " साहित्यकारों ने अपनी क्रांतिकारिणी रचानाओं के द्वारा ' अबला ' कही जानेवाली नारी को ' सबला ' बनाकर जीवन और समाज के हरक्षेत्र में उसे प्रतिष्ठित करने का उद्योग किया ।"[२] समग्रत:नारी और साहित्य का शाश्वत संबंध रहा है।

३.४ *हिंदी उपन्यास में नारी जीवन -*

उपन्यास के उद्भव से लेकर आजतक उपन्यास साहित्यमें नारी-जीवन के विविध पक्षों का चित्रण मिलता है। डॉ. रेवा कुलकर्णी के मतानुसार - " उपन्यास मानव जीवन का गद्यरूप महाकाव्य है। मनुष्य का जीवन घटनाओं का समूह है। इन घटनाओं को मूर्त करनेवाले साधन है चरित्र। इन चरित्रों द्वारा ही कथा का निर्माण होता है। मनुष्य का

---

१ *डॉ. रेवा कुलकर्णी - हिंदी के सामाजिक उपन्यासां में नारी, पृष्ठ ४०, ४१।*

२ *डॉ. सूतदेव ' हंस ' - उपन्यासकार चतुरसेन के नारी पात्र, पृष्ठ ३६६।*

स्वभाव एवं विशेषताएँ,उसकी कमजोरियाँ दिखाने का प्रयत्न उपन्यासकार इन चरित्रोंद्वाराकरता है। इसमें पुरूष चरित्र की तरह नारी चरित्रों का भी चित्रण होता है। बदलते हुए समय एवं परिवेश के साथ-साथ इस चित्रण में भी परिवर्तन होता है।''[१] डॉ. शैल रस्तोगी के मतानुसार " हिंदी उपन्यासों में नारी के व्यक्तित्व विकास का मूल तोता-मैना की कहानियाँ है। पूर्व-प्रेमचंद युग तक नारी के व्यक्तित्व को कोई स्थायित्व नहीं मिल पाता। प्रेमचंद युग तक पहुँचते-पहँचते नारी में एक स्थिरता आ जाती है, और प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में विभिन्न समस्याओं के निरूपण में नारी का चरित्र भी एक समस्या बन जाती है। हिंदी का उपन्यास अपनी विकास-यात्रा के प्रारंभ से ही नारी के रूप में जिस क्षीण सूत्र को पकड़कर चला था उसका उत्तरोत्तर विकास हुआ है। नारी के व्यक्तित्व विकास में हिंदी उपन्यासों का बहुत बड़ायोग रहा है। पूर्व प्रेमचंद युग की नारी लहंगा पहने,घँघट काठे, आभूषणों से लदी उपन्यास के पीछे-पीछे चल रही थी किंतु आज की नारी आगे है। नारी का रूप ही बिलकुल बदल गया है। उसकी भाषा बदल गयी है - जीवन के मान बदल गये हैं और उसके विचारों में आमूल्य परिवर्तन हुए है। आज की नारी में जीवन की विषमताओं से लोहा लेने की अद्‌भुत क्षमता है। उसके प्राणों में विद्रोह की कठोर झंझार्ये हिलोरें लेती है।''[२]

आज के स्त्री उपन्यासकार नारीरूपी समस्या सुलझाने के साथ-साथ नारी यथार्थ का कटु रूप प्रस्तुत कर रही हैं। " आज का हिंदी उपन्यास संघर्षोन्मुख हो उठा है। वर्तमान मध्यवर्ग के संघर्ष की स्पष्ट

---

१ *डॉ. रेवा कुलकर्णी - हिंदी के सामाजिक उपन्यासें मे नारी, पृष्ठ ४१।*

२ *डॉ. शैल रस्तोगी - हिंदी उपन्यासों में नारो, पृष्ठ ३३२, ३३३।*

छाया उसमें प्रतिबिंबित हुई है। इधर अनेक स्त्री लेखिकाएँ भी उपन्यास लेखन की ओर प्रवृत्त हुई हैं। पहले खेवे की उपन्यास लेखिकाओं में शिवरानी प्रेमचंद, तेजरानी दीक्षित, कुटुबं प्यारी देवी और उषादेवी मित्रा का नाम लिया जा सकता है। नवीनतम लेखिकाओं में मृदुला गर्ग, शशिप्रभा शास्त्री, मालती जोशी, शिवानी, मन्नू भंडारी आदिके नाम आते हैं ''[१]

डॉ. नीता रत्नेश के मतानुसार - " हिंदी उपन्यास साहित्य में युग और समाज की परिवर्तित स्थितियों के अनुरूप ही नारी का स्वरूप भी निरंतर गतिशील रहा । उपन्यास के उद्‌भव से लेकर वर्तमान समय तक उसका रूप इस तथ्य का साक्षी है।''[२] आज का हिंदी उपन्यास नारी-जीवन की कुण्ठा एवं संत्रास सबको समेटकर चल रहा है। हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी परिवर्तन निरंतर रूप से होता आया है।

३.५ *' अकेला पलाश ' उपन्यास में चित्रित नारी -*

भारतीय संस्कृति, समाज और परिवार आदि में नारी का महत्त्वपुर्ण स्थान होता है। पुरूष के समानही नारी को भी समाज का एक अविभाज्य अंग माना जाता है। अपना स्थान निभाने के लिए उसे अनेक रूपों से गजरना पड़ता है। " स्त्री के व्यक्तित्व में कोमलता और सहानुभूति के साथ साहस तथा विवेक का एक ऐसा सामंजस्य होना आवश्यक है, जिससे हृदय...ऐसा एक भी सामाजिक प्राणी न मिलेगा जिसका

---

१ *डॉ. शैल रस्तोगी - हिंदी उपन्यासों में नारी, पृष्ठ १५।*

२ *डॉ. नीता रत्नेश - भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नारी, पृष्ठ ५२।*

जीवन माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री आदि स्त्री के किसी-न-किसी रूप से प्रभावित न हुआ हो ।''[१]

मेहरुन्निसा परवेज खुद एक नारी होने के नाते उन्होंने अपने साहित्य में नारी के बहु आयामी व्यक्तित्व का चित्रण सफलता से किया है। उनके ' अकेला पलाश ' उपन्यास में नारी-जीवन के विविध रूपों प्रकाश डाला गया है।

३.५.१ *माता* -

नारी के विभिन्न रूपों में सबसे महत्त्वपूर्ण रूप माता का है। दया, क्षमा, ममता, स्नेह, वात्सल्य का रूप है माँ है। ममता सेभरी, करूणामयी, आदरणीय माँ के स्वभाव में धैर्य,त्याग सब गुण होते हैं। महादेवी वर्मा के अनुसार - " स्त्री के विकास की चरमसीमा उसके मातृत्व में हो सकती है।''[२] पत्नी का रूप निभाते-निभाते उसे माता का भी कर्तव्य निभाना पड़ता है।" पत्नी का पद पाकर नारी के व्यक्तित्व का विकास आवश्य होता है।परउसके जीवन की सच्ची सार्थकता और पूर्णता तभी होती है जब वह माँ बनती है।''[३] मॉ अपने संतान को जन्म देकर उसका लालन-पालन करती है। उसका जीवन सँवारती है। एक माँ की यही कमना होती है कि उसकी संतान हमेशा जीवन में कामयाब रहे, सुखी रहे । इसलिए वह बचपन से ही संतान पर अच्छे संस्कार से प्रभावित

---

१ *महादेवी वर्मा - श्रृंखला की कडियाँ, पृष्ट १८।*

२ *वही, पृष्ठ ६६।*

३ *अग्रवाल बिंदु - हिंदी उपन्यासो में नारी-चित्रण, पृष्ठ २६४।*

करने की कोशिश करती है। खुद दु:ख सह लेती है मगर अपने संतान को सुखी रखती है। खास करके उसे अपनी बेटी के बारेमें चिंता लगी रहती है। क्योंकि वह बेटी को पराया धन मानकर सँभालती है। उसकी शादी की चिंता उसे लगी रहती है। शादी होने तक वह अपनी बेटी को कर्तव्य समझकर सँभालती है। शादी के पहले कहीं बेटी गैर रास्ता न अपनाये या उससे कोई भूल न हो इसकी खबर उसे रखनी पड़ती है। भविष्य में उसे पति न जाने कैसा मिलेगा इसी चिंता के कारण वह अपनी बेटी की शादी होने तक चैन से नहीं रह पाती।

' अकेला पलाश ' उपन्यास में माता के अलग-अलग रूपों का चित्रण किया गया है।

३.५.१.१ स्वार्थी माता -

तहमीना की माँ एक ऐसी माँ जो अपने संसार को बचाने के लिए अपनी बेटी का जीवन दाँव पर लगा देती है। अपने अय्याश पति के कारण उसे अपना सारा जीवन दु:ख में बिताना पड़ा है। वह अपने पति को अपने घर से, घर की जिम्मेदारियों से बाँध लेना चाहती है, उनके कर्तव्य का एहसास करवाना चाहती है और इस काम के लिए वह अपनी बेटी तहमीना का इस्तेमाल शतरंज के मोहरे की तरह करती है। तहमीना पंद्रह साल की होने पर वह अपने पति के मित्र को अपनी ही बेटी पर बलात्कार करने पर उद्दीत करती है और तहमीना को उसी व्यक्ति के साथ विवाह करने के लिए मजबूर करती है। कमजोर और उम्र से छोटी तहमीना को माँ की इच्छा के आगे झूकना पड़ता है और एक ऐसे व्यक्ति के साथ विवाह करना पड़ता है जो उसके पिता की उम्र का है और तहमीना ने उसे कभी शक्ल-सूरत से भी नसंद नहीं किया है। तहमीना की

माँ अपने पति को जिम्मेदारियों का एहसास कराने के उद्देश्य में सफल हो जाती है लेकिन इसमे उसे अपनी बेटी की कुर्बानी देनी पड़ती है। तहमीना अपनी माँ के बारे में सोचती है - " उन्होंने एक ऐसा जाल बिछाया जिसमें एक नाजुक-सा परिंदा आ गिरा ... । परिंदा भी वह जिसे अभी ठीक से बोलना नहीं आता था, ठीक से उड़ान भरना नहीं आता था और जिसने उस कैद को ही मुक्ति मान लिया था।''[१] ऐसी माता बहुत कम ही होगी जो अपनी बेटी पर जबर्दस्ती करने की इजाजत किसी पराये मर्द को देती होगी।

३.५.१.२ आदर्श माता -

विवेच्य उपन्यास में मेहरुन्निसा ने माता के आदर्श रूप का सहजता से चित्रण किया है। तहमीना एक आदर्श माता है। उसमें और उसके पति में दरार होने के बावजूद उसने अपनी माता की भूमिका सफलता से निभायी है। तहमीना सोशनवर्कर है। उसे अपने काम के कारण हमेशा दौरे पर जाना होता है। उसका बेटा रिंकू अभी छोटा है, उसकी जिद के कारण कभी-कभी तहमीना को उसे अपने साथ ले जाना पड़ता है। लेकिन काम करते समय भी उसका ध्यान रिंकू की तरफ ही लगा रहता है। वह अपने बेटे की अच्छी सेहत के लिए उसे बाहर का खाना कभी नहीं खिलाती है। बाहर जाते समय उसकेपास रिंकू का खाना हमेशा तैयार रहता है। सहकारी द्वारा पूछे जानेपर कहती है-" रखना पडता है, औरत को अपना हर रूप याद रहता ।''[२]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज-अकेला पलाश, पृष्ठ १०३।*

२ *वही, पृष्ठ २५ ।*

अपने वैवाहिक जीवन की घुटन तथा अपने काम के तनाव का असर वह कभी रिंकू पर पड़ने नहीं देती । वह रिंकू के बारे उसका व्यक्तित्व अच्छा बनाने के लिए हमेशा सतर्क रहती है। रिंकू पर अच्छे संस्कार करने की उसकी हमेशा कोशिश रहती। ऐसा करते समय वह रिंकू को कभी-कभी डांटती भी है लेकिन बाद में खुद ही दु:खी हो जाती है।उसे खुद को कितनी भी परेशानियों का सामना करना पड़े लेकिन वह अपने बेटे के प्रति कर्तव्य पूरा करने से कभी चूँकती नहीं है। उसकी हमेशा यही कोशिश रहती है कि उसका बेटा दुनिया में एक अच्छा व्यक्ति बनकर रहे । स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यास में मेहरुन्निसा ने आदर्श माता का पर्याप्त चित्रण किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

३.५.१.३ वात्सल्यमयी माता -

' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने माता के वात्सल्यमयी रूप का भी चित्रण किया है। नाहिद बाजी को अपने ससुराल में ढेर सारा दु:ख है। आंतर्जातिय विवाह के कारण उसे अपने मायके और ससुराल वालों से उपेक्षा ही मिलती लेकिन उसे बेटा होने के बाद दु:ख का एहसास कम होने लगता है। अपने बेटे को देखकर वह अपने दु:ख ,तकलीफे भूल जाती है। नाहिद की अपने बेटे के प्रति प्रेम, ममता देखकर तहमीना सोचती है - " पहले जो रूप था वह एक लड़की, बहू का था और अब एक माँ का रूप था जो ममता से भरी भविष्य के लिए आशावादी उठी थी । तभी तो सब कहते हैं औरत माँ बनकर सब सह लेती है, सारे कष्टों को झेल लेती है।''[१] मेहरुन्निसा ने - अकेला पलाश ' में नाहिद के रूप में

---

१ मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १७४।

वात्सल्यमयी माता का सफलता से चित्रण किया है।

३.५.१.४ परम्परागत माता -

' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने परम्परागत माता का बारीकी से चित्रण किया है। डॉ. महेश अग्रवाल की माँ कट्टर हिंदू परिवार की है। अपने बेटे का एक मुसलमान लड़की के साथ विवाह करना उन्हें पसंद नहीं है। लेकिन अपने बेटे की खुशी के कारण वह इस विवाह का स्वीकार कर लेती है। ' अकेला पलाश ' में परम्परागत माता का बहुत कम चित्रण परिलक्षित होता है।

तरू और विमला दोनों की माताएँ दु:खी है। विमला अपना घर छोड़कर भाग गई है और गलत रास्ते पर चल रहीं है और तरू भी अपने पति और पिता का घर त्याग कर अलग रहती है, इसीकारण दोनों की माताएँ दु:खी है। लेकिन अपनी बेटियों से प्रेम होने के कारण वे उन्हें मदद करती रहती है।

३.५.१.५ लापरवाह माता -

' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने कही माता के लापरवाह रूप का भी चित्रण किया है। तरू अपने पति का घर छोड़कर अपने बच्चों के साथ रहती है। तरू का अपने बच्चों की तरफ बिलकुल ही ध्यान नहीं रहता है। उसका सारा वक्त अपनी ओर ही रहता है। वह बाहर जाते समय खुद तो अच्छी तरह से तैयार होती है, लेकिन बच्चों को ठीक तरह से तैयार नहीं करती । बच्चों को हमेशा डाँटती रहती है। वह उन्हें कभी ममता से, प्यार से समझाने की कोशिश नहीं करती । बच्चे हमेशा उससे

डरे-सहमें रहते है। वह ऐसा सोचती है कि इतने सारे कष्ट सिर्फ अपने बच्चोंके लिए सह रही हे। तरू माता का आदर्श रूप नहीं है।

इस तरह ' अकेला पलाश ' मे माता के कई अलग-अगल रूपों का चित्रण मेहरुन्निसा ने सूक्ष्मता से किया है।

३.५.२ पत्नी -

भारतीय परिवार में नारी का पत्नी रूप अपना विशेष स्थान रखता है। महाभारत में उसे " पुरूष की आत्मा का आधा भाग, उसकी श्रेष्ठतम मित्र, त्रिवर्ग की मूल, परिवार उद्धारक कहाँ गया है। '' [१] इतनाही नहीं पत्नी रूप में नारी को संपूर्ण दु:खों की एकमात्र औषधि कहा गया है -

" न च भार्या सम किंचित् विद्यतेभिणजामतम् ।

औषधं सर्व दु:खेषु सत्यमेतद ब्रविमि ते ।''[२]

विवाह के पश्चात नारी पत्नी रूप में पुरूष को प्रेरणा, पूर्ति और उत्साह प्रदान करती है। प्रेम, मान, त्याग, सेवा, आत्मसमर्पण और विश्वास की सीढ़ियों से वह पति के हृदय तक पहुँचती है। समस्त मधुर और कोमलतम भावनाओं को चरणोंपर वार कर वह धन्य होती है। अपने स्वभाव से परिवार में फुलवारी खिलाती है अथवा चिनगारी बिखेरकर सर्वनाश भी कर सकती है। वह परिवार,समाज और विश्व में शांति का निर्माण कर सकती है। पत्नी के संबंध में कहा गया है -

---

१ *महाभारत - आदिपर्व, पृष्ठ ७४,७५।*

२ *वही, पृष्ठ ७४,७५।*

" गृहिणी सविच: सखी मिघ: प्रिय शिष्या ललिते कलाविधौ ।''[१] अर्थात पत्नी गृहिणी, गृहकार्यमें सखी,एकांत में मित्र और ललित कलाओं में प्रिय शिष्या होती है। पारिवारिक कर्तव्यों का पालन करने पर भी यदि नारी पति के हृदय नें स्थान न पा सकी तो एक रिक्त का उसके मन-मस्तिष्क में समा जाती है। पतिव्रत धर्म का महत्त्व प्राचीन काल से माना गया है। मनु ने कहा है -" वैवाहिको विधि: स्त्रीणं संस्कारों वैदिक: स्मृत:। पति सेवा गुरौ वासो गृहस्थीऽग्निपरिक्रिया ।''[२] अर्थात् विवाह स्त्रियों का एक संस्कार है। पतिसेवा ही उनके लिए गुरूचर में निवास के समान है। सुबह-शाम रसोई बनाना ही उनका होम है। आधुनिक युग में इस आदर्श की आड़ में पत्नियों पर अत्याचार भी किए गए हैं। उन अमानवीय अत्याचारों का विरोध होना चाहिए। डॉ. नीता रत्नेश के मतानुसार -" पत्नी का परिवार में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है, वह गृहिणी रूप में जहाँ घर रूपी राज्य की स्वामिनी है, वहीं प्रेमिका, अर्धांगिनी तथा सती आदि रूपों में पति की प्रेरणादायी शक्ति रही है।''[३]

' अकेला पलाश ' में पत्नी के कई रूपों का सफलता से चित्रण किया है।

---

१ *कालिदास - रघुवंश - खंड-८, पृष्ठ ६७।*

२ *मनुस्मृति - खंड-२, पृष्ठ ६७।*

३ *डॉ. नीता रत्नेश - भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नारी,पृष्ठ ११०।*

३.५.२.१ *असफल पत्नी* -

तहमीना का पति जमशेद तहमीना के पिता की उम्र का है। वह नपुंसक है। जमशेद तहमीना की मानसिक और शारीरिक जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता । जमशेद की यही कमजोरी दोनों के बीच हमेशा दीवार बनकर रहती है। तहमीना को हमेशा अपने मन को मारकर जीना पड़ता है। लेकिन फिर भी वह जमशेद के प्रति वफादार है। वह अपनी जिम्मेदारीयाँ जानती है और उन्हें अच्छी तरह से निभाती भी है। वह सोचती है - " उसका जीवन भी कैसा है, वह इस घर में सफल गृहिणी है, सफल माँ है, पर वह चाहकर भी सफल पत्नी नहीं बन पाई। चाहकर भी वह जमशेद को कभी पूर्ण रूप से, मन से, तन से जमशेद को पति नहीं मान पायी ।"[१] पूरी जिंदगीभर उसे यह नाटक करना पड़ता है, दुनिया को दिखेना पड़ता है कि वह सुखी है। सारे लोग, खुद उसकी सहेलियाँ यह सोचती है कि वह सुखी है, उसे पूर्ण रूप से सुख प्राप्त है। सिर्फ तहमीना जानती है कि यह सब कुछ झूठ है, दिखावा है।

जमशेद के तहमीना पर कई बंधन है। उसे तहमीना का किसी के साथ बात करना पसंद नहीं है। तहमीना जमशेद की पत्नी है लेकिन दोनों में कभी अपनापन या कोई गहरा रिश्ता नहीं बन पाता है। अनके जीवन में हमेशा एक फासला रहता है, एक ऐसी खाई जिसे दोनों में से कोई कभी पार नहीं कर पाया । तहनीना हमेशा ऐसा महसूस करती है कि - " जमशेद एक ऐसे रोशनदान है, जिन्हें, उसके नन्हें हाथ कभी नहीं छू सके। वह सारी उम्र एडियाँ उचका-उचकाकर उन्हें छूने भर की

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ८२।*

कोशिश करती रही पर इसमें व कभीसफल नहीं हो पायी।''[१]

तुषार जब तहमीना को अपने साथ संबंध रखनेके लिए कहता है, तो वह जमशेद के बारे में कहती है-" तुम भूलते हो तुषार, मेरे सर पर छत है, उसने मुझे घर दिया,वरना बोलों तो मेरी कहाँ जगह थी ? माना उस पुरूष ने मुझे कुछ नहीं दिया, फिर भी एक घर और थोड़ी-सी सुरक्षा तो दी । पति का प्यार न सही पर एक हमदर्द की हमदर्दी तो मिली ।''[२] जमशेद से कुछ न मिलने पर भी वह सोचती है कि वह उसकी पत्नी है और उसके साथ में ईमानदारी से जुड़े रहने की शर्त उसके साथ बाँध दी गई है।

तहमीना अपनी ओर से पूरी कोशिश करने के बाद भी वह जमशेद को कभी पूर्ण रूप से नहीं पा सकती है। उन दोनों के बीच हमेश दुरियाँ रहती है। इसी कारण तहमीना को असफल पत्नी के रूप में देखा जा सकता है।

३.५.२.२ *कमजोर, बेबस पत्नी* -

' अकेला पलाश ' में कमजोर तथा बेबस पत्नी का चित्रण मिलता है। तहमीना का माँ एक दुःखी, कमजोर और बेबस पत्नी है। तहमीना की माँ और पिता दोनों हमेशा किसी न किसी बातपर लड़ते रहते है। उसने बचपन से दुःख देखा है ।शादी के बाद भी सुख नहीं मिल पाता है। पति का स्वभाव कुछ ऐसा है कि घर में उन्हें जरा भी अच्छा नहीं

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०३।*

२ *वही, पृष्ठ १३७।*

लगता और सारा वक्त अय्याशी में गुजरता है। घर सारा पैसा वह खुद खर्च करते है। बाहर की औरते ऊँचे-ऊँचे दामों की साड़ियाँ पहनती है और उन्हें हमेशा फटी-पुरानी साड़ियाँ पहनने की मिलती है। घर में जब झगड़ा होता है तो उसका पति उसे घर से बाहर निकाल देता है। उसे हमेशा अपने पति की मार खानी पड़ती है। तहमीना माँ के बारे में कहती है - " वह अपने अधिकार के लिए, अपने बच्चों के अधिकार के लिए जीवन-भर लड़ती रही । असुरक्षा का भय माँ के जिंदगी-भर अपनी सुरक्षा के लिए एक घरौंदे की तलाश में रही।"[१] इतना होने के बावजूद अपने पति द्वारा अत्याचार सहने के बावजूद वह हमेशा अपने घर से, पति से जूड़ी रहना चाहती है। वह अपने प्रति होने वाले अन्याय के विरूद्ध आवाज नही उठाती क्योंकि वह लाचार है, बेबस है। उसे किसी का सहारा नहीं और इसीकारण वह अपने पति के अत्याचार सहनेपर मजबूर है। अनपढ़ होने के कारण वह इतने निर्दयी पति को परमेश्वर मानती है - " वह एक अनपढ़ औरत थी, जिनका दायरा सिर्फ पति के इर्द-गिर्द घूमता था। सारा जीवन उन्होंने पति को घर लौटा लाने के चक्कर में ही काट दिया । हर समय अपना स्थान छिन जाने का उन्हें भय रहा, हमेशा यह भय रहा कि पिताजी उनके स्थानपर किसी दूसरी स्त्री को न ले आयें । औरत जीवन में हर चीज त्याग सकती है, पर अपने स्थान पर वह दूसरी स्त्री को बर्दाश्त नहीं कर सकती ।"[२]

तहमीना की माँ जीवनभर अपने पति के अत्याचार सहते हुए जीवन बिताती है। ' अकेला पलाश ' में कमजोर तथा बेबस पत्नी का

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १००।*

२ *वही, पृष्ठ १०३।*

कममात्रा में चित्रण हुआ दृष्टिगोचर होता है।

इनके अलावा इस उपन्यास में मीनाक्षी, तरू आदि नारियों का असफल पत्नी के रूप में, नाहिद का दु:खी पत्नी के रूप में चित्रण किया गया है।

३.५.३ *प्रेमिका* -

" प्रेम जीवन का अमृत है। यदि कहीं पूर्णता है तो प्रेम में ही है। प्रेम जीवन का अभिन्न अंग है। इसकी व्यापकता सभी जगह है। इसमें वासना की गंध नहीं होती, अत: यह एकनिष्ठ प्रेम सच्चा और पवित्र होता है। प्रेम किया नहीं जाता, हो जाता है। जब कोई प्रेम तोड़ने को उद्यत होता है, जानिये वह प्रकृति से लोहा लेने के लिए तैयार है।"[१]

स्त्री-पुरूष का एक-दूसरे के प्रति आकर्षण निर्माण होना एक प्राकृतिक सत्य है। आदिकाल सेही नर-नारी के संबंधों में प्रेमतत्व को प्राकृतिक मानकर स्वीकार किया गया है। नारी अपने प्रेमिका रूप में पुरूष के जीवन में सुख, आशा, खुशियाँ लेकर आती है। वह पुरूष की प्रेरक शक्ति बनती है। आधुनिक काल में शिक्षा, सिनेमा, आधुनिक विचारधारा आदि के प्रभाव से इसका विकास होता जा रहा है। यह कभी सफल बनता है या कभी असफल प्रेमी को पाने के लिए प्रेमिका को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज से संघर्ष करना पड़ता है। संघर्ष करते समय उसे कभी हारना पड़ता है तो कभी उसकी जीत होती है। हार-जीत

---

१ *बिजलीप्रभा प्रकाश - जैनेंद्र के उपन्यासों के नारी चरित्रों का मनोवैज्ञानिक धरातल, पृष्ठ १०५ ।*

के इस संघर्ष में उसे अपना परिवार या प्रेमी दोनों में से एक को चुनना पड़ता है। अपनी खुशी के लिए परिवार की खुशी को त्यागना पड़ता है या फिर परिवार के लिए अपना जीवन दाँव पर लगाना पड़ता है।

फ्रान्सिसी लेखिका सिमोन-द-वोव्हा ने " दि सेकेण्ड सेक्स '' में बताया है कि " नारी के लिए प्यार का अर्थ है अपने प्रिय के लिए सब कुछ निष्छावर कर देना । पुरूष के लिए प्रेमिका अन्य मूल्यों के समान एक मूल्य होती है, जिसे वह अपने अस्तित्व में एकाकार कर लेना चाहता है।'' नारी में प्रेम की तन्मयता, कोमलता पुरूष की अपेक्षा अधिक होती है। प्रेमिका रूप काव्य एवं साहित्य में व्यापक रूप में मिलता है। प्रेयसी कवि के स्वप्नों की प्रतिमा, पथप्रदर्शिका, जीवन की ज्योति आदि बनकर आती है।

' अकेला पलाश ' में प्रेमिका के अनेक रूप मिलते हैं ।

३.५.३.१ *विद्रोही प्रेमिका* -

' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने नाहिद के माध्यम से प्रेमिका के विद्रोही रूप का चित्रण किया है। नाहिद एक विद्रोही प्रेमिका के रूप में पाठकों के सामने आती है। परिवार की जिम्मेदारीयाँ निभाने के लिए वह बहुत बड़ी आयु तक विवाह नहीं करती । लेकिन जब उसकी मुलाकात डॉ. महेश अग्रवाल के साथ हो जाती है, तो नाहिद उसकी ओर आकर्षित होती है। नाहिद डॉ. अग्रवाल से प्रेम करने लगती है। डॉ. अग्रवाल से प्रेम होने से पहले नाहिद कहा करती थी कि वह जीवन भर विवाह नहीं करेगी, अपने परिवार के लिए वह अपनी कुर्बानी देगी । लेकिन बाद में वह तहमीना से कहती है - " मैं आखिर कब तक घर के

पीछे अपने को मारती रहूँगी ? जो फर्ज भाइयों का है उसे मैं अब तक निभाती आयी, पर तब भी मेरा ख्याल नहीं हुआ और अगर आज मैंने खुद अपनी पसंद से किसी को चुन लिया तो इसका मतलब नहीं कि लोग मेरा अपमान करें।''[१] और नाहिद डॉ. अग्रवाल के साथ विवाह करना तय करती है। लेकिन नाहिद मुसलमान है तो महेश हिंदू और इसीकारण नाहिद के अब्बा इस विवाह को इजाजत नहीं देते । नाहिद अपने प्रेमी को पाने के लिए अपने घर-परिवार को त्यागकर विवाह करती है।

जिस विश्वास और सुख की अपेक्षा से नाहिद यह विवाह करती है उसमें से उसे कुछ भी नहीं मिल पाता है। विवाह के बाद न तो उसे मायकेवालों से प्रेम मिलता है और न ही ससुराल वालों से । मुसलमान होने के कारण उसे हर वक्त सास के ताने सुनने पड़ते है। नाहिद तहमीना से कहती है - " मैं धोखा खा गयी, सपने इतने जल्दी झूठे हो जाते है, मैंने नहीं जाना था।''[२]

नाहिद अपना प्रेम पाने के लिए जिन सपनों को लेकर अपने परिवार वालों से विद्रोह करके विवाह करती है, उसके सपने पूरे नहीं होते, उसे अपना जीवन दु:ख में बिताना पड़ता है। विवाह के पश्चात जब तहमीना उसे देखती है तो उसकी हालत देखकर हैराण हो उठती है - " मैली-सी साड़ी पहने, दुबली-सी, सलाई-सी देह और धुँधली रंगत वाली वह औरत नाहिद बाजी ही थी, यह मानना ही पडा। साडी की जरा भी क्रिच खराब न होने देनेवाली, दूध की तरह उजली रंगत लिए और चमकती आँखोंवाली, वह नाहिद बाजी क्या हुई ? कहाँ गुम हो गयी ? कहाँ

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ६८।*

२ *वही, पृष्ठ १७१।*

पीछे छूट गयी ? ''[१]

नाहिद एक ऐसी प्रेमिका है, जो अपने प्रेमी को पाने के निए अपने इतने वर्षों का संयम तोड़कर उसके साथ विवाह करती है, जिसके कारण उसे अपने ससुराल और मायकेवालों की नफरत सहनी पड़ती है। मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में प्रेमिका के विद्रोही रूप बारीकी से चित्रण किया है।

३.५.३.२ *असफल प्रेमिका* -

नारी एक बार जिसे प्रेम करती है अंत तक उसी के लिए अपना जीवन संकट में डाल देती है, अपनी खुशियों को गम में डूबो देती है, समाज के ताने सुनकर भी परिवार, माता-पिता के प्रति कर्तव्यों के आगे सर झुका लेती है।

मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में असफल प्रेमिका का चित्रण किया है। तहमीना एक विवाहित स्त्री है। उसका पति जमशेद उम्र में उससे काफी बड़ा है और वह नपुंसक है। जमशेद तहमीना की शारीरिक और मानसिक जरूरते पूरी नहीं कर सकता । तहमीना को अपना पूरा जीवन तनाव, घुटन और दु:ख में बिताना पड़ता है। एक कर्तव्य मानकर वह इस रिश्ते को निभा रही है,उसने अपने मन और शरीर की इच्छाओं को दफन कर दिया है।

तहमीना अपनी निर्जिव जिंदगी को किसी तरह ढोती जा रही है। लेकिन उसकी मुलाकात जब एस.पी. तुषार पंकज से हो जाती है तो

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १६६।*

उसका सारा जीवन ही बदल जाता है। तुषार से एक-दो मुलाकातों के बाद ही तहमीना को पता चलता है कि तुषार उसे चाहने लगा है। पहले तो तहमीना उसे टालने की उसे रोकने की कोशिश करती है। जब तुषार उसे पाने की इच्छा व्यक्त करता है, तो तहमीना उसे समझाती है कि वह एक विवाहित स्त्री है, उसका एक बच्चा भी है। वह तुषार से कहती है -' आप मेरे जीवन में मत आओ... मुझे मजबूर मत करो, मेरा जीवन बँधी लीक पर चल रहा है, मुझे बहकाओं मत ।''[१]

तहमीना अपने पति के साथ ईमानदार रहना चाहती है, जबकि वह उसे कुछ सुख नहीं दे सकता । तुषार तहमीना की इसी कमजोरी का फायदा उठाकर उसे बहकाने में कामयाब रहता है। तहमीना तुषार की चाहत को देखकर उसे अपना तन-मन समर्पित करती है। तुषार को पाकर वह बहुत खुश है। तुषार के जीवन में आने से तहमीना का अकेलापन दूर होता है। पहले तहमीना को यह सब गलत लगता है लेकिन अंत में वह भी तुषार के बिना खुद को अकेला महसूस करने लगती है। उन दोनों के प्रेम की चर्चाएँ पूरे शहर में होने लगती है। बदनामी से डरकर तुषार तहमीना से मिलना बंद कर देता है। तहमीना तुषार से मिलने के लिए तड़पने लगती है। वह मीनाक्षी से कहती है - " मैं तुषार से मिलना चाहती हूँ, और यदि नहीं मिल पायी तो लगता है मैं अब जी नहीं पाऊँगी ।''[२] तहमीना तुषार के प्यार में सारी लोक-लाज छोड़कर तुषार के पीछे भागती है। लेकिन तुषार उसे टालदेता है।

तुषार तहमीना को बिना बताएँ शहर छोड़कर चला जाता है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ट १३६।*

२ *वही, पृष्ठ १८५।*

तहमीना का जीवन व्यस्त हो जाता है, कहीं पर भी उसे शांति नहीं मिलती। प्रेम में धोखा खाने के बाद वह सोचने लगती है कि वह कितनों की नजरों से गिर गयी होगी । तुषार के विरह में वह लगभग पागल-सी बन जाती है। हर वक्त उसे तुषार की ही याद आती है। वह अजय से कहती है -" मन से तुषार के ख्याल ही नहीं जाते । हम जितना अपने को बिजी रखते हैं, वह उतना ही याद आता है, हमारे सामने होता है। बोलिए हम क्या करे ? फिर जिस जगह हम टूटे है, जहाँ हमारे पैर काट लिए गये है, वही पर हमें खड़ा होना है, अपने को सँभालना है। तुषार समझता है हम टूट कर मिट्टी में मिल जायेंगे, पर नही हम यहीं जीकर हँसकर उसे दिखायेंगे ।'' तहमीना जो तुषार के विरह में अपना जीवन समाप्त करने के बारे में सोचती थी, अंत में खुद को सँभाल लेती है और नये सिरे से अपने जीवन की शुरूवात करती है। लेकिन जीवनभर यह सवाल उसके मन में उठ़ता रहता है - " कोई व्यक्ति ऊँचे पद पर है, उसका बाहर नाम है, तो इसका क्या यह अर्थ है कि वह अपनी सारी भावनाओं को मार दे ? उसे प्यार करने का कोई हक नहीं ? उसे जीने का हक नहीं ? वह लोक-लाज के कारण क्या घुट-घुटकर मर जाये ? क्या उसके बड़े होने का शोहरत हासिल करने का यह दंड है ? क्या वह एक आम आदमी की तरह, आम इन्सान की तरह नहीं जी सकता ? उसे हँसने का कोई अधिकार नहीं, आखिर ऐसा क्यो ?''[१]

तहमीना के पात्र को पढ़ने के बाद यही निर्णय कर सकते है कि तहमीना एक असफल प्रेमिका है। अपनी ओर से तो वह अपना प्रेम पाने की पूरी कोशिश करती है लेकिन उस्का प्रेमी उसे धोखा देकर उसका

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२३।*

प्रेम असफल करके चला जाता है।

३.५.३.२ *प्रेम में घर त्यागनेवाली प्रेमिका* -

मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में प्रेम में घर का त्याग करनेवाली प्रेमिकाओं का भी चित्रण किया है। विमला एक ऐसी प्रेमिका है,जिसे प्यार के कारण अपना पूरा जीवन दाँव पर लगाना पड़ा। स्कूल में पढ़ते समय वह गलत लोगों के चक्कर में फँस जाती है। उसका प्रेमी उसे रंगीन सपने दिखाकर बंबई ले जाता है और वहाँ उससे काफी बुरे ाम करवाता है। विमला के जरिए वह पैसे कमाता है और एक दिन उसे अकेली छोड़कर भाग जाता है। विमला जब हारी-थकी-सी अपने घर लौटती है, तो घर वाले बदनामी से डरकर उसे फिरसे घर में रखने से इन्कार कर देते है। विमला बेसहारा होकर भटकने लगती है। जिस विश्वास के साथ वह अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है वह विश्वास टूट जाता है। घर से भागने की सजा उसे जीवन-भर भुगतनी पड़ती। गलत प्रेमी के कारण विमला का पूरा जीवन बरबाद होता है। इस तरह ' अकेला पलाश ' में प्रेम कारण घर त्यागनेवाली नारी का वास्तविक चित्रण प्राप्त होता है।

३.५.४ *बहन* -

सभ्यता के प्रभात काल में बहन का संबंध नगण्य था। पर सभ्यता के विकास के साथ यह मान्य हो गया । भारतीय समाज में स्त्री-पुरूष के सहज संबंध का प्रतीक " बहन '' शब्द बन गया है। बचपन का साथी बहन का स्थान महत्त्वपूर्ण है। बहन छोटी हो तो भाई से प्यार

पाती है, बड़ी हो तो प्यार और आदर दोनों पाती है। पुरूष के हृदय के वासनायुक्त सात्विक प्रेम पर बहन का अधिकार होता है। भाई-बहन के निश्छलप्रेम से मनुष्य कभी अध:पतित नहीं होता। आधुनिक काल में बहन भाई को सिर्फ अपनी ही नही, देश की रक्षा हेतु भी राखी भेजती है।''[१]

' अकेला पलाश ' में बहन का ज्यादा वर्णन नहीं मिलता । इसमें तुषार की दो बहनों का उल्लेख किया गया है। तुषार की दो कुँवारी बहने हैं। तुषार को अपनी बहनों के लिए कोई लड़का पसंद ही नहीं आता और वह अपनी बहनों को किसी मामूली घर में देना नहीं चाहता है। तुषार की इस बात पर उसकी बहन शिखा शिकायत करती है। इसके बावजूद भी तुषार की बहनों को तुषार से प्रेम और आदर है और तुषार ने भी अपने बहनों की जिम्मेदारी निभाने के लिए अभी तक खुद शादी नहीं की है।

इसके अतिरिक्त तहमीना और नाहिद का बहन के रूप में चित्रण हुआ है।

३.५.५ *सास* -

भारतीय परिवार में सास का स्थान महत्त्वपूर्ण और सम्मानजनक होता है।

प्राचीन भारतीय समाज में सास और बहू का संबंध अधिकांश मात्रा में ' अहि नकुल ' सा रहा है। आधुनिक भारतीय समाज में इस रिश्ते में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। ' अकेला पलाश ' में नारी के

---

१ *डॉ. जे. एम. देसाई - आधुनिक हिंदी काव्य में नारी, पृष्ठ १४।*

सास रूप का वर्णन बहुत कम मिलता है।

३.५.५.१ परम्परागत सास -

' अकेला पलाश ' में सास के परम्परागत रूप का चित्रण मिलता है। नाहिद बाजी की सास एक परंपरागत सास है। उसके एक लौते बेटे ने उसकी मर्जी के खिलाफ एक मुसलमान लड़की से विवाह किया है, जब कि वह हिंदू है। हर हिंदू परिवार की होने के कारण नाहिद बाजी की सास नाहिद को खुलेमन से स्वीकार नहीं कर सकती । वह नाहिद के हाथ का छुआ पानी तक नहीं पीती । नाहिद की रसोई अलग है, तो उसकी सास की अलग । वह हर वक्त नाहिद को ताने देती रहती है, उससे नफरत करती है। नाहिद की सास दूसरों के सामने हमेशा यही कहती रहती है - " हमारा तो एक ही बेटा था, शादी धूम-धाम से करना चाहते थे । क्या-क्या अरमान नहीं थे मेरे ? इसी के कारण मैंने दूसरा ब्याह भी नहीं किया; पर बड़ा होकर यह कितना गद्दार निकला! औलाद जब बड़ी होकर माँ-बाप को नकार दे इससे बड़ा दुःख दूसरा नहीं होता न।"[१]

नाहिद की सास जातियता माननेवाली, परंपरागत सास के रूप में चित्रित की गयी है।

३.५.६ नायिका के रूप में नारी -

' प्रायः नायक की पत्नी या उसकी प्रेमिका को नायिका माना

---

१ मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १७०।

जाता है। नायिका को शीलसंपन्ना, तेजमयी, तथा कर्तव्यवती नारी होना चाहिए । नायिका होने के लिए आवश्यक है कि वह कथाविकास में महत्त्वपूर्ण योग दे, वह कथा का केंद्र हो, उसका व्यक्तित्व कथा-प्रसंगोंपर छाया रहे, कथा की वांछित परिणती में उसका महत्त्वपूर्ण योगदान हो । वह फल की भोक्ता हो तथा रचना के प्रतिपाद्य को उजागर करे। ''[१]

' अकेला पलाश ' नायिकाप्रधान उपन्यास है। इसकी नायिका है तहमीना । एक नायिका के निए आवश्यक सभी गुण तहमीना के चरित्र में पाये जाते है। उपन्यास का पूरा कथानक तहमीना के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। सारी घटनाओं का चित्रण तहमीना को केंद्र बनाकर किया गया है।

तहमीना एक दुःखी नायिका है। बचपन से ही उसने दुःख का सामना किया है। थोड़ी बड़ी होनेपर उसकी माँ अपने स्वार्थ के लिए उसका विवाह एक ऐसे व्यक्ति के साथ करती है, जो उसके पिता की उम्र का है और जिसे तहमीना ने कभी शक्ल-सूरत से भी पसंद नहीं किया । मजबूरी के कारण उसे विवाह करना पड़ता है। विवाह के बाद भी वह जमशेद को पूर्णरूप से अपना पति नहीं मान पाती है। जमशेद नपुंसक है और वह उसकी शारीरिक और मानसिक जरूरतें नहीं पूरी कर सकता है। उसका वैवाहिक जीवन घुटन, तनाव और दुःख से भरा हुआ है। पति, बच्चा होने के बावजूद वह खुद को अकेला महसूस करती है। जमशेद तहमीना की कोई भी अपेक्षा पूरी नहीं कर सकता। लेकिन फिर भी तहमीना अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभाती है । वह आदर्श पत्नी तथा आदर्श माता की भूमिका अच्छी तरह से निभाती है।

---

१ *डॉ.हरिशंकर शर्मा - हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नारी, पृष्ठ ११०।*

तहमीना की कमजोरी का फायदा उठाकर तुषार उसके जीवन में प्रवेश करने में सफल होता है। तहमीना पहले तुषार के प्रेम को स्वीकार नहीं करती लेकिन अंत में वह तुषार को समर्पित हो जाती है। तुषार को पाकर उसे लगता है कि मानो स्वर्ग मिल गया है। तुषार जब उसे वास्तविकता का परिचय कराता है तो तहमीना उससे कहती है - " तुम एक बहुत बड़ा पाप करने जा रहे थे, जो मेरी किसी तरह ढोई जा रही मुर्दा जिंदगी में जीवन-संचार करने का प्रयास कर रहे थे। में चाहती हूँ कि मेरा हृदय सिर्फ हृदय बनकर रह जाय, दिल नहीं । वह शरीर के अन्य हिस्सों से खराब खून खींचकर उसमें नया खून संचार करनेवाला फिल्ट्रेशन तथा पंपिग स्टेशन ही बना रहे । तुम इस पंपिंग स्टेशन को दिल मत बनाओं।''[१]

जब शहर में दोनों के प्रेम की चर्चाएँ होने लगती है, तब बदनामी से घबराकर तुषार तहमीना को बिना बताए शहर छोड़कर चला जाता है। तहमीना फिर से अकेली पड़ जाती है। तुषार को लौटा लाने के लिए तहमीना काफी प्रयास करती है, लेकिन वह असफल हो जाती है। तहमीना साचेती है - " कितना अजीब है। पुरूष पहले औरत के पीछे भागता है, बाद में औरत को उसके पीछे भागना पड़ता है, अपना सबकुछ लुटाकर ।''[२]

तहमीना के चरित्र में स्वाभिमानी, समझदार, जिद्दी, ममतामयी, भावुकता, दूसरों को मदद करनेवाली आदि गुण मिलते है,

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १६६।*

२ *वही, पृष्ठ १८६ ।*

जिसके कारण उसे नायिका का पद प्राप्त होता है। तहमीना एक दु:खी नायिका है।

मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में नारी के नायिका रूप का सफलता से चित्रण किया है।

३.५.७ *परिस्थितियों के जाल में फँसी नारी -*

डॉ. सुधा श्रीवास्तव के मतानुसार - " इतना तो सच है कि मनुष्य अपनी विद्या, बुद्धि तथा विकसित मस्तिष्क का उपयोग करते हुए भी कभी न कभी परिस्थितियोंद्वारा बन गए ताने-बाने में फँस ही जाता है। ऐसी विषयस्थिति में वहाँ फँसता है जहाँ से निकलना आसान नहीं होता । कहीं कहीं इसे नियति समझकर स्वीकार कर लिया जाता है और कहीं इससे छुटकारा पाने के लिए हर संभव प्रयास किये जाते है।''[१]

परिस्थिति बड़े-से-बड़े राजा महाराजाओं को भी अपने आगे घुटने टेकने पर मजबूर करती है, वहाँ सामान्य मनुष्य की क्या कहें। ' अकेला पलाश ' में जितनी भी नारियों की चित्रण किया है, उनका जीवन देखने के पश्चात यही कहना पड़ता है कि यह सभी नारियाँ परिस्थिति के जाल में फँसी हुई है। परिस्थिति ने उन्हें दु:ख सहने पर मजबूर किया है।

तहमीना इस उपन्यास की नायिका है। उसका पूरा जीवन ही परिस्थिति के आगे हार चुका है। उसके अपनों ने ही अपने स्वार्थ के लिए उसे धोखा दे दिया है। माता-पिता, पति, प्रेमी सभी ने अपने स्वार्थ के लिए उसका इस्तेमाल किया है। जीवनभर उसे अकेलेपन को सहना पड़ता है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २१६ ।*

उसका पूरा जीवन दु:ख, दर्द और घुटन से भरा हुआ है। दु:ख, दर्द और कठिनाइयों को सहकर वह अकेलेपन का स्वीकार कर लेती है।परिस्थिति उसके साथ ऐसा खेल खेलती है कि तहमीना यह कहने पर मजबूर होती है - " घुटना तो मुझे हर हालत में हैं, हम पैदा ही इसलिए हुए है।"[१]

लेकिन इतना होने के बावजूद तहमीना परिस्थितियों से हार नहीं मानती, वह उसके जालसे बाहर निकलकर जिद, लगन और परिश्रम से अपना जीवन सफल बनाती है। वह इस बात को स्वीकार लेती है-" मेरे जीवन में कष्ट ही कष्ट है, कहीं छाँव नहीं, पर नहीं मैं थकूँगी नहीं ,मुझे चलना है, चलती रहूँगी।"[२] तहमीना परिस्थिति से मजबूर न होकर दूसरों का सहारा बनती है।

नाहिद जिन सपनों को लेकर डॉ. महेश अग्रवाल के साथ शादी करती है, वह पूरे नहीं हो पाते। आंतर्जातीय विवाह के कारण उसे छुआछूत की समस्या का सामना करना पड़ता है। माय के वालों और ससुराल वालों की नफरत सहनी पड़ती है। वह अपनों के प्यार के लिए, स्नेह के लिए तरसती रहती है। उसके सारे हसीन सपने टूट जाते है। परिस्थिति के खेल को देखकर नाहिद को मानना पड़ता है कि -" जिंदगी को जितना आसान समझते थे, दरअसल जिंदगी उतनी सहज नहीं है ।"[३]

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १५२।*

२ *वही, पृष्ठ १५२।*

३ *वही, पृष्ठ १७२।*

३.५.८ *त्यागमयी नारी* -

" भारतीय संस्कृति में नारी को समर्पणमयी पत्नी, वात्सल्यमयी माता और ममतामयी बहन के रूप में चित्रित किया है। वह स्वयं त्याग की मूर्ति है। "[१]

डॉ. हरिशंकर शर्मा के मतानुसार - " नारी उपभोग में नहीं, उत्सर्ग में सुख पाती है। त्याग नारी की सहजवृत्ति है, बलिदान उसका चरित्र है।"[२]

त्याग ही नारी-जीवन का उद्देश्य है। हर युग में नारी को ही त्याग करना पड़ा है। ' अकेला पलाश ' में भी नारी का त्यागमयी रूप में चित्रण हुआ है। तहमीना का जन्म ही मानो त्याग करने के लिए हुआ है। तहमीना की शादी उसके पिता के उम्र वाले ऐसे व्यक्ति के साथ होती है, जिसे तहमीना ने कभी शक्ल-सूरत से भी पसंद नहीं किया है। तहमीना के अपने जीवन के बारे में, विवाह के बारे में तथा पति के बारे में जो सपने थे वह टूट जाते है, वह सोचती है - " कितने सुखद सपने थे, स्मृतियाँ थी जो एक डिब्बी में बंद थी, पर जब डिब्बी खुली तहमीना ने देखा सपने हवा की तरह उड़ गये और खाली डिब्बी इसके सामने थी । सपनों से भरी नींद टूटी भी तो यथार्थ की कठोर धरती पर ।"[३] तहमीना को अपने जीवन में पहला त्याग अपने सुखद सपनों का करना पड़ता है। उसे अपना पूरा जीवन त्याग में ही बिताना पड़ता है।

---

१ *डॉ. रमेश देशमुख - आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, पृष्ठ २१८।*

२ *डॉ. हरिशंकर शर्मा - हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास में नारी, पृष्ठ १६४।*

३ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १०१।*

बचपन में माता-पिता के झगड़ों के कारण घर की खुशी का त्याग करना पड़ता है, विवाह के पश्चात जब जमशेद उसकी कोई शारीरिक और मानसिक जरूरतें पूरी नहीं कर सकता तो उसे अपने तन-मन की इच्छाओं का त्याग करना पड़ता है। तुषार प्रेम के कुछ क्षण उसके जीवन में बिखेर देता है। वह उसकी बुझी हुई जिंदगी में आग लगाकर चला जाता है। जिसके कारण वह बहुत दु:खी हो जाती है। तुषार के गम में वह अपना जीवन तक त्यागने को तैयार होती है।

तहमीना को अपने जीवन में हर खुशी, सुख तथा इच्छाओं का त्याग ही करना पड़ता है। मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में त्यागमयी नारी का मार्मिक चित्रण किया है।

३.५.६ *मानवतावादी नारी -*

मानव और मानवता का अन्योन्य संबंध है। मानवता का संबंध मानव हृदय से है। मानवहृदय से जन्मी मानवता मानव को मानव बनाती है। डॉ. सुरेश सिन्हा का कथन है - " व्यक्तिगत स्तर पर तथा समाज के स्तरपर मानव जाति का सार्वभौमिक अनुभव ही मानवपूर्णता का वास्तविक मूल्य है और यही मानवतावाद का चरम उद्देश्य भी है। "[१] डॉ. देवेश ठाकुर के मतानुसार-" मानवतावाद के अंतर्गत मानव-प्रवृत्ति में मूल रूप से सत्-प्रवृत्तियों की स्थिति मानी गई है और दु:खी प्राणियों के प्रति सहानुभति, करूणा और सहयोगपूर्ण व्यवहार के आदर्श को अभिव्यक्ति मिली

---

१ *डॉ. सुरेश सिन्हा - हिंदी उपन्यास, पृष्ठ २५।*

है।''[१]

' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने मानवतावादी नारी का सूक्ष्म चित्रण किया है। उपन्यास की नायिका तहमीना मानो मानवता की देती ही है। अपने व्यक्तिगत जीवन में तो उसे ढेर सारे दु:ख ही मिले है। उसके अपनों से, परायों से उसे कुछ मिला भी है तो वह है दर्द । खुद का जीवन अंध:कार से भरा हुआ होने के पश्चात भी वह हमेशा दूसरों की मदद करती रहती है, दुसरों को सही पथ-प्रदर्शन कराती है। रजिया, दुलारीबाई तथा तरू जैसी स्त्रियों को वह जीवन का सही रास्ता दिखाती है, उन्हें गलत राह पर भटकने से बचाती है। विपुल के जीवन के दु:ख, अभाव देखकर वह खुद परेशान हो उठती है और उसकी कुछ भी मदद करने के लिए तैयार होती है।

तहमीना सोशलवर्कर है, वह अदिवासी क्षेत्र में काम करती है। जब वह देखती है कि कुछ औरतें चावल का कोंडा छानकर उसकी रोटिया बना रही है, तो उसे आश्चर्य और दु:ख होता है। वह सोचती है - " क्या इन्सान अब गाय-भैंसों की श्रेणी में आ गया है ? ''[२]

नाहिद के अपने पिता का घर त्यागकर डॉ. अग्रवालके साथ विवाह करने के निर्णय में तहमीना उसका साथ देती है। तहमीना मानती है कि कठिन समय पर ही आदमी की सही पहचान हो जाती है। मिसेज खैतान की बीमारी का पता चलनेपर, तहमीना उसके बच्चों का ख्याल कर उसे अपना इलाज तुरंत करने की सलाह देती है। तहमीना अपने जीवन में हमेशा दूसरों की मदत करती रहती है। उसके पति ने तो जीवन में उसे

---

१ *डॉ. देवेश ठाकुर - आधुनिक हिंदी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ, पृष्ठ ५७।*

२ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ५५ ।*

जरा भी सुख नहीं दिया है लेकिन उसके प्रति सारे कर्तव्य वह ईमानदारी से करती है। दूसरों का मदत करना ही उसका धर्म है। दूसरों के कष्ट के आगे वह अपना दर्द भूल जाती है। वह सुखी हुई नदी की तरह है - " नदी जब सुख जाती है तो उसका दर्द कितनों ने देखा था, कितनों ने परखा था! वह अपने सारे दर्द को गर्भ में छुपाये वीरान, हैरान-सी पड़ी रहती है।''[१]

तुषार के विरह में तहमीना को अपने जीवन का अंत करने की इच्छा होती है, वह बीमार पड़ जाती है। लेकिन अंत में जीवन का सत्य जानकर वह अपने जीवन का इस्तेमाल दूसरों का जीवन सँवारने के लिए करती है । दूसरों के दु:ख, दर्द दूर करने का प्रयास करती है। " वह ऐसा वृक्ष है जो सिर्फ दूसरों को सहारा देता है। अनगिनत नन्ही-नन्ही बेले उस तने का सहारा पाकर ऊपर चढ़ गयी है, पर उसे रखुद को कोई सहारा नहीं है। उसे अकेले इसीतरह जमीन मजबूती से पकड़े रहकर खड़ा रहना है। उपर आसमान भी है तो बहुत दूर और वह बिना सहारे के अगर लड़खड़ाती है तो उसके साथ ढेर सारी नन्ही-नन्ही बेलें नीचे गिर पड़ेंगी ।''[२]

तहमीना को मानवता का सम्मान करनेवाली तथा मानवता की राहपर चलनेवाली नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १२।*

२ *वही, पृष्ठ २१८।*

३.५.१० *संन्यासिनी* -

" संन्याश्रम में रहने और तद्नुकूल नियमों का पालन करनेवाली नारी संन्यासिनी है। "[१] धर्म के क्षेत्र में नारी को मोक्ष मार्ग की बाधा माना है। किन्तु बुद्ध ने नारी को संन्यास का अधिकार दिया । डॉ. जे.एम. देसाई के मतानुसार " धर्म के क्षेत्र में सिध्दों, नाथों और जैनियों ने उसे मोक्ष मार्ग की बाधा मानकर त्याज्य ठहराया । बुद्धने नारी को संन्सास का अधिकार तो दिया परंतु उसके कारण संघ के पतन की भविष्यवाणी भी उन्होंने की ।"[२]

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने विमला का संन्यासिनी नारी के रूप में चित्रण किया है। विमला है तो संन्यासिनी लेकिन यह व्रत उसने अपने मन से लिया नहीं है। स्कूल में पढ़ते समय वह गलत लोगों के चक्कर में फँस जाती है।एक लड़का उसे रंगीन सपने दिखाकर बम्बई ले जाता है, वहाँ उससे गलत काम करवाकर खुद पैसा कमाकर उसे अकेली छोड़ भाग जाता है। जब विमला वापस अपने घर लौटती है तो घरवाले बदनामी के ड़र से उसे घर में रखने से इन्कार करते है। बेसहारा विमला को मजबूरन आश्रमों का सहारा लेकर संन्यासिनी का रूप धारण करना पड़ता है। संन्यासिनी बनने के बावजूद भी उसके मन से अभी मोह खत्म नहीं हुआ है। वह बाहर की दुनिया में आम इन्सान की तरह जीना चाहती है और वह इसके लिए कोशिश भी करती है लेकिन समाज उसे नहीं अपनाता है - " मैं संन्यासी के वस्त्र धारण किए हुए थी और संन्यासी को

---

१ *डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' - भाषाशब्दकोष, पृष्ठ १४८६।*

२ *डॉ. जे. एम. देसाई - आधुनिक हिंदी काव्य में नारी, पृष्ठ ६।*

दूसरे लोग संसार त्यागा हुआ मनुष्य मानते है और संसार त्यागने के बाद उसे अपनाना नहीं चाहते ।''[१]

विमला अपना खर्च चलाने के लिए नौकरी करती है। और बाद में पता चलता है कि उसने स्वामी जी से विवाह भी किया है। उन्होने विमला को अपनी कमाई का आधार बनाया है। तहमीना के मन में विमला को लेकर कई सवाल उठते है जिसका जवाब देते हुए विमला कहती है - " मन तो एक ढ़ीठ बच्चे की तरह होता है, जो कभी नहीं मानता, उसे मार-मारकर लाइन पर लाना होता है। संन्यासी मनुष्य जन्म से नहीं होता, उसे तो उसकी परिस्थितियाँ बनाती है और उसे बने रहनेपर मजबूर करती है। ''[२]

विमला परिस्थिति के हाथों मजबूर होकर संन्यासी बन गई है। लेकिन उसके म्रन से मोह-माया का त्याग नहीं हुआ है। सामान्य लोगों की तरह ही उसके मन में अभी भी संसार और जीवन का आकर्षण है। इसलिए जब विमला तहमीना की साड़ी की तारीफ करती है, तो तहमीना उससे हकती है - " रंगों को उतारने के बाद और सफेद कपड़ा धारण करने के बाद रंगों की ओर तुम्हारा इतना झुकाव है ? ''[३] संन्यासिनी होकर भी वह जातियता को मानती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि विमला अंतरंग से संन्यासिनी नहीं है, यह तो भोगी नारी है, इसे संन्यासिनी कहना भी

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ६३।*

२ *वही, पृष्ठ ६६।*

३ *वही, पृष्ठ १६।*

संन्यासिनी शब्द का अपमान है। विमला जैसी नारियाँ अपने स्वार्थ कारण तपश्चर्या और साधना का बहाना बनाती है। वर्तमान युग की अधिकांश संन्यासिनी नारियाँ विमला की तरह विकृत ही है।" अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने नारी के संयासिनी रूप के खोंखलेपन का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है।

३.५.११ *समाजसेविका* -

सच्चा समाज सेवक अथवा समाज सेविका मानव का कल्याण करना अपना धर्म समझते है। समाजसेवक तथा समाजसेविका पीड़ित एवं दु:खियों की स्थिति सुधारने पर बल देते हैं। सच्चा समाज सेवक अथवा समाज सेविका प्रान्त, देश, धर्म और जाति विशेष के प्रति बद्ध नहीं होता ।

' अकेला पलाश ' में नारी को समाजसेविका के रूप में भी चित्रित किया हुआ दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका तहमीना एक समाजसेविका है। उसका अपना व्यक्तिगत जीवन दु:खों से भरा हुआ है लेकिन फिर भी वह दूसरों की सेवा करना, मदत करना तथा पथ-प्रदर्शन करने में जीवन की सफलता मानती है। जब वह निरीक्षण के लिए आदिवासी क्षेत्रों में जाती है तो उनकी हालत उनके अभाव तथा दु:ख, दर्द देखकर उसका मन दु:खी हो जाता है। तहमीना उनकी स्थिति देखकर सोचती है - " इन्हें सुधारने में, इन्सान बनाने में कितना समय लग जायेगा, तब भी शायद ये इन्सान नहीं बन पायेंगे, क्योंकि गरीबी, भूख, अभाव इनकी नस-नस में समा गया है और उसे मिटाना नाममयकिन-सा

है।'' अपनी ओर से जितनी हो सके वह उनकी मदद करती । तहमीना को सरकार की भ्रष्ट व्यवस्था से नफरत है। वह मानती है कि इसी के कारण इन लोगों की स्थिति में सुधारणा नहीं होती है। कोंडे की रोटी खाते हुए आदिवासियों को देख उसके मन में भ्रष्ट लोगों के प्रति और भी घृणा निर्माण होती है-" कम से कम इन परियोजनाओंद्वारा इन भूखें-नंगें बच्चों के मुँह में थोड़ा पौष्टिक आहार तो जाता है। पर वह भी कितना ! सारा कुछ तो बीच के लोग खा जाते है। इनसे ज्यादा भूखें तो भरे पेट वाले लोग है। ''[२]

तहमीना मन और लगन से समाज सेवा का काम करती है। वह धर्म या जातियता नहीं मानती। अपना काम करते समय उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पति का सहयोग नहीं मिलता, नेताओं की धमकीयों से लड़ना पड़ता है, समाज के लोगों का सामना करना पड़ता है। समाजसेवा के कारण उसका अपने परिवार की ओर भी दुर्लक्ष होता है। लेकिन फिर भी वह अपना काम ईमानदारी से करती रहती है। तुषार से धोखा खानेपर वह इतनी निराश होती है कि अपना जीवन समाप्त करने के बारे में सोचती है। अंत में खुद को सँभालकर वह दूसरों कीपथ-प्रदर्शिका बन जाती है। गलत राह पर चलनेवालों को सही राह दिखाती है। दुसरों के कल्याण के लिए वह अपना जीवन समर्पित करती है। आदिवासियों की स्थिति सुधारने के लिए हर-संभव प्रयास करती है।

समाज के प्रति उसका जो उत्तरदायित्व हैउसे तो तहमीना सफलता से निभाती है। लेकिन वही समाज उसके नीजी जीवन में दखल

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ ५५।*

२ *वही, पृष्ठ ५५।*

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

देकर उसका जीवन बरबाद कर देता है। समाज-सेविका के ऊँचे पद पर होने के कारण उसके व्यक्तिगत जीवन में अनेक तुफान आते है। इसलिए उसके मन में कई सवाल उठते है - " कोई व्यक्ति ऊँचे पद पर है, उसका बाहर नाम है, तो इसका क्या यह अर्थ है कि वह अपनी सारी भावनाओं को मार दे ? उसे प्यार करने का कोई हक नही ? उसे जीने का हक नहीं ? वह लोक-लाज के कारण क्या घुट-घुटकर मर जाये ? क्या उसके बड़े होने का शोहरत हासिल करने का यह दंड है ? क्या वह एक आम आदमी की तरह, आम इन्सान की तरह नहीं जी सकता ? उसे हँसने का कोई अधिकार नहीं, आखिर ऐसा क्यों ?''[१]

तहमीना समाज के प्रति अपना पूरा कर्तव्य निभाती है लेकिन समाज उसे दु:ख और दर्द के सिवाय कुछ भी नहीं दे पाता है। तहमीना एक सफल समाज सेविका है। ' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा के आदर्श रूप का सरसता से चित्रण किया है।

३.५.१२ *कमजोर नारी -*

' भाषा शब्द कोष ' के अनुसार ' कमजोर ' का अर्थ दुर्बल, असमर्थ एवं अशक्त '' होता है। ''[२] निर्बल अथवा कमजोर नारी अबला बनाकर ही जीवन यापन करती है। कमजोर नारी सबला बनकर साहस के साथ कार्य नहीं करती है। कमजोरी शारीरिक एवं मानसिक भी हो सकती है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ २२३।*

२ *डॉ. रामशंकर शुक्ल ' रसाल ' - भाषा शब्द कोष, पृष्ठ १४८९।*

प्रस्तुत उपन्यास में तहमीना की माँ कमजोर नारी के रूप में पाठकों के सामने आती है। तहमीना की माँ एक अनपढ़ औरत है, जिनका दायरा सिर्फ पति के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। सारा जीवन उन्होंने पति का घर लौटा लाने के चक्कर में ही काट दिया। हर समय अपना स्थान छिन जाने का भय उन्हें रहा ।

तहमीना की माँ को बचपन से ही दु:ख का सामना करना पड़ा है। पैदा होते ही माँ की मृत्यु हो गई। सौतेली माँ की देखरेख में वह पली थी। विवाह के पश्चात भी उन्हें सुख नहीं मिल पाता है। अय्याश पति उनपर हर वक्त अत्याचार करता रहता है। उन्हें पति की मार खानी पड़ती है। पति उन्हें घर से बाहर भी निकाल देता है। वह अपने और अपने बच्चों के अधिकार के लिए जीवनभर लड़ती रहती है। उन्हें न तो मायके में स्थान था और न ही पति के घर में । " यह असुरक्षा का भय माँ के जिंदगी-भर साथ रहा, माँ जिंदगी भर अपनी सुरक्षा के लिए एक घरौंदे की तलाश में रही ।"[१]

तहमीना की माँ अपपढ़ होने के कारण कमजोर औरत है, जो अपने हक को पूरी तरह से प्राप्त नहीं कर सकती । और कमजोर होने के कारण उन्हें अपने पति के अत्याचार सहनेपर मजबूर होना पड़ता है। अकेलेपन के एहसास ने उन्हें कमजोर बना दिया है। तहमीना की माँ आर्थिक, मानसिक और शारीरिक सभी दृष्टि से कमजोर है।

' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने कमजोर नारी का मार्मिक चित्रण किया है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १००।*

३.५.१३ *अकेलेपन से पीड़ित नारी -*

डॉ. शीलप्रभा वर्मा के मतानुसार " आधुनिक युग में नारी नौकरी करती है। वह किसी पर भार नहीं बनना चाहती है। पति से कभी-कभी संबंध विच्छेद हो जाता है या फिर विधवा हो जानेपर अथवा विवाह न करने की इच्छा के कारण नारी को एकाकी जीवन व्यतीत करना पड़ता है।''[१] वर्तमान युग में अकेलापन बढ़ रहा है। " आधुनिक समाज में एकाकी नारी जीवन का प्रचलन बढ़ रहा है। समाज एकाकी नारी जीवन में विभिन्न प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न करता है। उसे शारीरिक व मानसिक कष्ट देना चाहता है। इन सभी कष्टों से जूझती हुई आज की नारी एकाकी जीवन व्यतीत करती है। ''[२] अकेलापन बीसवीं शताब्दी का एक बड़ा अभिशाप है।

' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने नारी के अकेलेपन को वाणी देने का प्रयास किया है। तहमीना को अपना पूरा जीवन अकेलेपन के एहसास में गुजारना पड़ता है। बचपन में माता-पिता के झगड़ों के कारण वह अकेली पड़ जाती है। विवाह के बाद पति उम्र में बड़ा होने के कारण दोनों में एक दीवार सी बनी रहती है। तहमीना का पति जमशेद उसकी मानसिक और शारीरिक जरूरते पूरी नहीं कर सकता । एक ही छत के नीचे रहने के बावजूद दोनो में एक फासला है, दूरियाँ है। कभी-कभी तहमीना अपने अकेलेपन के बारे में सोचती है तो उसे आश्चर्य होता है - " उसकी अपनी जिंदगी भी कितनी अजीब हादसों से भपपुर है ? वह सारा

---

१ *डॉ. शीलप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृष्ठ ४८।*

२ *वही, पृष्ठ १९।*

कुछ उसने अकेले जिया था, भोगा था। अपना पति, बच्चा होने के बावजूद तहमीना खुद को अकेला महसूस करती है। उसे समझनेवाला कोई नहीं है। सभी समझते है कि वह पूर्ण रूप से सुखी है। तहमीना ऐसा दिखावा करनेपर मजबूर है। तुषार उसके जीवन में प्रेम के कुछ क्षण लेकर आता है और उसे छोड़कर चला जाता है। उसे फिर से अकेलेपन का सामना करना पड़ता है। तहमीना विपुल से कहती है - " पंगडंडियाँ पल-भर साथ चलकर वीराने में खो जाती है। आदमी यह जानता है कि यह आगे गुम हो जायेगी, तभी भी उसपर चलता है। मेरे जीवन में कष्ट ही कष्ट है, कहीं छाँव नहीं पर नहीं मैं थकूँगी नहीं, मुझे चलना है, चलती रहूँगी ।"[१] तहमीना इस बात को कभी नहीं भूलती कि वह जीवन में अकेली है और उसे अकेलेही रहना है। तुषार के चले जानेपर वह कहती है - " जीवन में वैसे भी हमें अकेले तो चलना ही था, पर यह एहसास तो था कि कोई हमारे साथ है, हमारे पीछे खड़ा है। अब जब कि यह एहसास खत्म हो गया है तो झूठे आदर्शों को ओढ़ने से क्या फायदा ? अब जो सहना है मुझे अकेले ही सहना है।"[२] तहमीना जीवन के इस सत्य को जान जाती है कि उसे अकेले ही जीना है, उसका अपना कोई नहीं है। इसलिए वह हमेशा एक झूठी हँसी मुख पर चढ़ाये जीती रहती है, क्योंकि वह बचपन से अकेली है। भीड़ है - ' पर वह भीड़ उसके लिए नहीं, भीड़ में भी वह अकेली है।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रमुखता नारी के अकेलेपन का ही चित्रण किया है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - अकेला पलाश, पृष्ठ १५२।*

२ *वही, पृष्ठ २२३।*

३.५.१४ *शोषित नारी* -

स्वातंत्र्यपूर्व काल में साहूकारों, जमीनदारों एवं सरकारी कर्मचारियों द्‌वारा समाज का शोषण होता था। वर्तमान युग में समाज में अनेक मात्रा में शोषक प्रवृत्तियों का विकास हुआ है।

' अकेला पलाश ' में चित्रित लगभग सभी नारियाँ किसी-न-किसी द्‌वारा शोषित ही है।

३.५.१४.१ *माँ, पति, प्रेमी द्‌वारा शोषित नारी* -

' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने माँ, पति तथा प्रेमी द्‌वारा शोषित नारी का चित्रण किया है। तहमीना की माँ अपने घर को बचाने के लिए, अपने स्वार्थ के लिए तहनीना की शादी एक ऐसे व्यक्ति के साथ कराती है जो महमीना के पिता की उम्र का है और जिसे तहमीना ने कभी भी पसंद नहीं किया । विवाह के बाद नपुंसक पति को पाकर तहमीना को अपनी शारीरिक और मानसिक इच्छाओं को मरना पड़ता है। तुषार उसे बहकाकर, रंगीन सपने दिखाकर, उसकी कमजोरी का फायदा उठाकर उसे अकेली छोड़कर चला जाता है।

तहमीना को अपनों द्‌वारा ही शोषित होना पड़ता है। जिसके कारण उसका जीवन दर्द की कहानी बन जाता है। इस तरह ' अकेला पलाश ' में माँ, पति तथा प्रेमि द्‌वारा शोषित नारी का अधिक मात्रा में चित्रण किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

३.५.१४.२ *सास द्‌वारा शोषित नारी* -

सास द्‌वारा शोषित नारी का चित्रण ' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने किया है। नाहिद अपने परिवार को त्यागकर डॉ. अग्रवालसे

विवाह करती है। जो सपने उसने देखे थे वह झूठ निकलते है और उसे हकीकत का सामना करना पड़ता है। मुसलमान होने के कारण उसे दिन-रात सास के ताने सुनने पड़ते है, सास हिंदू होने के कारण उसे छुआछूत का सामना करना पड़ता है। इस तरह उसका मानसिक शोषण किया जाता है। ' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने पतिद्वारा शोषित नारी का चित्रण किया है।

३.५.१४.३ *पतिद्वारा शोषित नारी* -

मेहरुन्निसा ने ' अकेला पलाश ' में पतिद्वारा शोषित नारी का दयनीय चित्रण किया है। तहमीना की माँ को अपने अभ्याश पति के अत्याचार सहने पड़ते है। उसकी मार खानी पड़ती है। उसका पति उसे कभी भी घर से बाहर निकाल देता है। हमेशा उसे असुरक्षा का भय सताता रहता है। अपना पूरा जीवन वह पति को पाने के प्रयास में व्यतीत करती है। इस तरह वह भी शारीरिक और मानसिक दृष्टि से शोषित नारी है। ' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने पतिद्वारा शोषित नारी का दयनीय चित्रण किया है।

३.५.१४.४ *नेताद्वारा शोषित नारी* -

दुलारीबाई एक विधवा औरत है। ग्रामसेवक उसे डरा-धमकाकर अपने साथ संबंध रखनेपर मजबूर करता है। उसकी कमजोर, बेसहारा स्थिति का फायदा लेकर ग्रामसेवक उसका शारीरिक शोषण करता है। ' अकेला पलाश ' में मेहरुन्निसा ने नेताद्वारा शोषित नारी का सूक्ष्म चित्रण किया है।

३.५.१४.५ *प्रेमी तथा संन्यासियोंद्वारा शोषित नारी –*

विमला का प्रेमी उसे धोखा देकर उसे अकेली छोड़कर चला जाता है। घरद्वारा त्याग दी हुई विमला आश्रम में सहारा पाती है तो वहाँ पर उसपर कई संन्यासी बलात्कार करते है। ' अकेला पलाश ' में प्रेमी तथा संन्यासियोंद्वारा शोषित नारी का पर्याप्त मात्रा में चित्रण किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

इस तरह प्रस्तुत उपन्यास की ज्यादातर नारियाँ शोषित है।

निष्कर्ष –

साहित्य और मानव जीवन का निकट संबंध है। नारी मानव-जीवन का महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक पक्ष है। जबसे साहित्य का सृजन हुआ तबसे वर्तमान युग तक के साहित्य मे नारी-जीवन का चित्रण प्रचुर मात्रा में मिलता है। हिंदी उपन्यासों में उपन्यासकारने नारी के जीवन में समय के साथ पर्याप्त परिवर्तन दिखाया है। नर और नारी दोनों एक ही है। समाजरूपी रथ-इन्हीं दो पहियों के बलपर अग्रसर होता है।

मेहरुन्निसा नारी मन की कुशल चित्रकार है। मेहरुन्निसा जी अपने – ' अकेला पलाश ' उपन्यास में नारी के विविध रूपों की चितेरी बन गयी है। मेहरुन्निसा द्वारा लिखित ' अकेला पलाश ' में चित्रित माँ रूप दया, क्षमा, ममता, स्नेह, वात्सल्य और सेवा की प्रतिमूर्ति है तो पत्नी रूप निस्वार्थ एवं पवित्र प्रेम से सम्पन्न है। लेखिकाने प्रस्तुत उपन्यास में बहन का स्नेहमयी एवं सास का असत् रूप चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने नायिका रूप में शाश्वत पीड़ा को वाणी दी है। उपेक्षा, अन्याय एवं अकेलेपन को झेलती हुई नायिका की करूण कथा में

अबला और सबला रूप प्रकट हुआ है। मेहरुन्निसा ने अबला नारी को सबला बनवाने का सफल प्रयास किया है। ' अकेला पलाश ' की नारी अपने जीवन की विषमताओं से संघर्ष करती हुई कर्तव्य की ओर उन्मुख होती है। परिस्थितियों के जाल में फँसी नारी की दुरावस्था होने के बाद भी परिस्थिति से समझौता करती है किन्तु विद्रोह प्रदर्शित नहीं करती है। इस उपन्यास में नारी का त्याग अनुपम है। नारी ने त्याग के कारण अपना सुख न्यौछावर कर दिया है। इस उपन्यास की कई नारियाँ समाज सेविका एवं मानवतावादी रूप में आधुनिक नारी के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है, तो कई नारियाँ ऐसी भी है जो समाज सेवा के नामपर अपना लाभ उठाती है। नारी अपनी कमजोरी के कारण आत्मपीड़क तो कभी-कभी परपीड़क बन जाती है।

इस उपन्यास की संन्सासिनी नारी दिखावे की है। नारी मूलत: कमजोर मानी जाती है, उसका चित्रण संवेदना से किया गया है। ' अकेला पलाश ' की नारी कभी-कभी दिल से और परिस्थिति के कारण एकाकी रहती है। इसमें शोषित नारी का स्तर पीड़ादायी है। प्रेमिका का विद्रोही, सफल, असफल रूप चित्रित किया गया है। ' अकेला पलाश ' के माध्यम से मेहरुन्निसा परवेज जी ने नारी के सत् एवं असत् दोनों पक्षों का चित्रण कर नारीके विभिन्न रूपों पर प्रकाश डाला है।